

इन शब्दों के साथ में अपनी बात समाप्त करता हूँ।

STATEMENT RE : LAUNCH OF SATELLITE LAUNCH VEHICLE, SLV-3-D-2

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, ATOMIC ENERGY, SPACE, ELECTRONICS AND OCEAN DEVELOPMENT (SHRI SIVRAJ V PATIL) : The Satellite Launch Vehicle, SLV-3-D-2, with the new augmented fourth stage motor, lifted off at 11:05:45 hours from Sriharikota Range on April 17, 1983 and placed a 41.5 kg Rohini Satellite, RS-D-2, in a near-earth orbit. The launch was witnessed by the Prime Minister and the Chief Minister of Andhra Pradesh. The performance of the launch vehicle and the injection of the satellite into the orbit was normal. All the subsystems of the launch vehicle functioned satisfactorily and confirmation of the completion of the first orbit was received at the Mission Control Centre at 1300 hours.

This flight is the fourth in the SLV-3 series. The first experimental flight took place in August 1979. The second experimental flight (July 1980) placed the Rohini Satellite (RS-1) of about 35 kg in a near-earth orbit. The first developmental flight of SLV-3 (SLV-3-D-1) placed the Rohini Satellite (RS D-1) carrying a land-marker camera in May 1981.

The SLV-3-D-2, in addition to the new improved fourth stage, carried several new indigenously developed subsystems and components. The payload of the launch vehicle, namely, RS-D-2 satellite, incorporates a 2-band (visible and near infrared) CCD

camera system with a "SMART" sensor for imaging of the land-marks and other ground features. Preliminary orbital data indicates the orbit to be about 371 kilometres by 861 kilometres with a period of 97 minutes. However, more precise information on the orbit will be known in about a week's time. The satellite is expected to be in orbit for over a year. The in-orbit checkout of the satellite is under progress. All initial indications are that the performance of the subsystems is normal. After test and checkout, the operations of the "SMART" sensor are expected to commence in about a week.

The launch operations for SLV-3-D-2 involved concerted and dedicated efforts of about 800 scientists, engineers, technicians, and supporting staff.

The successful launch of SLV-3-D-2 has established a firm base of Launch Vehicle Technology which will directly feed into the larger launchers i.e., the Augmented Satellite Launch Vehicle (ASLV) and the Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV) currently under development.

All these developments will help our space scientists and technologists in putting in orbit our own satellites which will be able to do remote sensing and similar applications which will ultimately help in studies of monsoons, resources on the land and in the sea etc. which will be of great help to our people particularly our farmers.

We are proud of this achievement of our scientists, engineers, technicians and workers and would like to convey our congratulations and good wishes to all of them and express the hope they will keep up their

[श्री वृद्धि चन्द्र जैन]

endeavours in promoting scientific and technological excellence with self-reliance.

MR. CHAIRMAN : I am sure all sections of the House join the Chair in conveying congratulations and good wishes to the scientists, engineers, technicians and workers.

SHRI SAMAR MUKHERJEE (HOWRAH) : We convey full appreciation of the whole House.

MR. CHAIRMAN: We resume our discussion on the demand for Grant relating to the Ministry of Agriculture Shri Viridhi Chander Jain.

15.10 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS, 1983-84 CONTD

Ministry of Agriculture—Contd

श्री वृद्धि चन्द्र जैन (बाड़मेर) : सभापति महोदय, कृषि अनुदानों की माँग पर मैं अपने विचार आपके समक्ष रखना चाहता हूँ। कृषि के क्षेत्र में हम आत्मनिर्भर हो चुके हैं। इस सम्बन्ध में मैंने गत अधिवेशन में अपने विचार प्रकट किये थे। परन्तु जिस प्रकार मानसून की स्थिति है, और जैसी अव्यवस्था चल रही है, उसको देखते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम अभी तक आत्म-निर्भरता के नजदीक आये हैं परन्तु पूरी आत्म-निर्भरता हम प्राप्त नहीं कर पाये हैं।

मैं यह आपके समक्ष रखना चाहता हूँ कि सन् 1979-80 में कृषि उत्पादन में हमारी प्रगति अच्छी नहीं रही। उस समय जनता पार्टी का राज था। 1980-81 में 129.6 मिलियन टन हमारी पैदावार हुई। 1981-82 में हमारी रिकार्ड पैदावार 133.1 मिलियन टन हुई। परन्तु 1982-83 में 125 मिलियन टन

पैदावार हुई। ये आंकड़े सरकार द्वारा आर्थिक समीक्षा में दिये हुये हैं। मैं यह बताना चाहता हूँ कि मानसून की अनिश्चितता की वजह से हमारे यहाँ अनिश्चितता की स्थिति बनी रहती है। अभी 1982-83 की यह स्थिति है कि 16 प्रांत सूखे की चपेट में हैं। 1983-84 की स्थिति भी हमारे सामने है। जो वर्षा हुई है वह शताब्दी में नहीं हुई। दिल्ली के बारे में यह वर्णन है कि 14 सेंटीमीटर वर्षा हुई है। फसलों को इससे काफी क्षति पहुँची है। 1982-83 में फसलों को बड़ी भारी क्षति हुई और 1983-84 में रबी का उत्पादन अच्छा नहीं हो सकता। इन स्थितियों को देखते हुये हमें अकाल और बाढ़ के नियन्त्रण के लिए स्थायी कदम उठाने होंगे। अगर अकाल और बाढ़ नियन्त्रण के लिए कदम नहीं उठाए गए और बिजली का उत्पादन नहीं बढ़ाया गया तो हम अपने लक्ष्यों की पूर्ति नहीं कर सकेंगे और आत्मनिर्भर नहीं हो सकेंगे। हम नहीं चाहते कि हम किसी दूसरे देश से गेहूँ का आयात करें। जहाँ 70 प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर हो और फिर भी आवश्यकता के अनुसार उत्पादन न हो तो यह हमारे लिए प्रगति का सूचक नहीं है। यह हमारे लिए गौरव की बात नहीं है। इसके लिये हमारे किसानों और वैज्ञानिकों को ठोस कदम उठाने होंगे। राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार को इसके लिए विशेष प्रयत्न करने होंगे। विशेषकर सिंचाई की ओर कदम उठाने होंगे।

सिंचाई के बारे में यह स्थिति है कि अभी हमारे यहाँ केवल 17 प्रतिशत क्षेत्र के अन्तर्गत आ पाया है। पाकिस्तान में 67 प्रतिशत क्षेत्र सिंचाई के अन्तर्गत है। जब तक सिंचाई के क्षेत्र को नहीं बढ़ाया जाएगा तब तक हम किसी भी स्थिति में आत्मनिर्भर नहीं होंगे। राजस्थान के बारे में मैं कहना चाहता हूँ कि अगर राजस्थान नहर का काम तीव्रता से होता तो यह 1970 में बन जाती। राजस्थान का कायाकल्प हो जाता और बैकवर्ड एरिया नहीं रहता। उत्पादन में राजस्थान आगे होता और दूसरे प्रदेशों की भी मदद करता और राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में सहयोग देता। हमें अपनी सिंचाई योजनाओं में जितनी रफ्तार से चलना चाहिए उतनी रफ्तार से नहीं चल पा रहे हैं।